वल्लभाचार्य भी वैष्णव हैं। कृष्ण के भक्त सो ही (लक्ष्मी नारायण राधेश्याम) भक्त सो विष्णु के भक्त। मगर इनको पता ही नहीं है। कृष्ण तो फर्स्ट प्रिंस है सतयुग का और वो ही वहॉ जाकर महाराजा बनेगा। बच्चों को अब सारा ज्ञान मिला है कि जो भी वैकुण्ठ के राजा–रानी बनते हैं। वो ही फिर जरूर ही 84 जन्मों में आते हैं। अपने को अब पक्का निश्चय होना चाहिए कि अब हमारा अंतिम जन्म है। सतयुग की बादशाही लेने में। फिर तो अब जो इतने भारत के खण्ड कर दिये हैं एक भी नहीं रहने का है। अब का भारत तो स्वर्ग की भेंट में कुछ भी चीज नहीं है। भले यहॉ बहुत ही बड़े2 मकान हैं। 40 मंज़िलों के भी मकान हैं। क्योंकि दुनियॉ जास्ती ही बढ़ती जाती है तो ही इतने बड़े2 मकान बनाते रहते हैं। वहॉ कब भी मंजिल आदि नहीं होती है। बाप अब इस में बैठे हुये हैं। कहते हैं यह पार्ट बजाना कोई बुरी बात नहीं है। तुम बच्चे जानते हो 84 हमने जन्म लिये हैं। बाप बच्चों को ही समझाते हैं। जिनको ही कल्प पहले समझाया था। बच्चे आहिस्ते2 वृद्धि को पाते रहते हैं। कोई को माया का तूफान लगता है गिर पड़ते हैं। कोई2 मास का कोई 6 महीने का कोई वर्ष का होता है तो भी मर पड़ते हैं। कोई तो तूफान लगते भी वो पक्के ही खड़े रहते हैं। अब बाप ने समझाया है कि विकल्पों के तूफान तो मनुष्यों को आते ही हैं। भले तुम संगमयुग पर हो तो भी कनेक्शन कलियुगी सम्बंधियों के साथ है ना। तुम जानते हो योग में रहने से ही विकर्म विनाश होते हैं। अब देखो (लच्छू–ईशू) इतना बड़ा परिवार था जिसमें से आकर यह दो बच्चियॉ बची हैं। इसलिए बाबा कहते हैं माया बड़ी चतुर है। बच्चों को पता भी नहीं पड़ता है और वो चूहे के मुआफिक काट जाती है। अब बाबा कहते हैं भल जहॉ भी रहो मगर बाबा को याद करते रहो और मुरली की कदर रखो। तो बच्चे कहॉ भी रहें तो भी मुरली टेप बाबा भेज सकते हैं। हमें बाबा पढ़ाते हैं अगर यह भी बच्चों को याद रहे तो भी बच्चे कब भी मुरझाय नहीं सकते। मगर पता नहीं क्यों मैं बच्चों पर इतनी मेहनत करता हूँ तो भी भूल जाते हैं। जबकि क्लास की टीचर तो निमित्त मात्र को मैंने रखी है। उनमें कोई तो लटक ही पड़ते हैं। नहीं तो याद तो बहुत रहता है उनके लिए। मगर जो सच्चा टीचर है उसको भूल जाते हैं। अब बाप कहते हैं मैं तुम सब बच्चों को ले जाने के लिए आया हूँ तो अब तुमको तीव्र पुरुषार्थी बनना है। अब यह पक्का याद रखो कि हम शिवबाबा को याद करने से ही सतोप्रधान बनेंगे। वहॉ तो दुःख का नामोनिशान ना होगा। अब बाप के लिए लोग ज्योति स्वरूप भी कहते हैं। फिर ब्रह्म तत्व की पूजा करते हैं। फिर सर्वव्यापी कह देते हैं तो ही बाबा कहते हैं कि धर्म ग्लानी हुई है और तो ही भक्ति को दुर्गति मार्ग कहते हैं। अब तुम बच्चे जो कि पक्के हो वो ही अच्छी तरह से जानते हो कि हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। तो ही अब बाप से हम पूरा वर्सा लेंगे। बाप का बच्चों पर बहुत आर और प्यार रहता है तो ही बाबा बच्चों को नित नई ही राय देते रहते हैं। माया सुख में रहने ना देती है। बच्चों को तो कहीं पर भी मूंझना ना चाहिए। बच्चों को अपने पर भी पूरा निश्चय होना चाहिए कि हम जरूर बाप से पूरा ही वर्सा लेंगे। बाबा के पास अब भी साहुकार प्रजा है। सबको बाबा लेकर ही जावेगा ; क्योंकि रहबर है ना। अब बाबा के पास प्रजा भी नम्बरवार है। बाबा बच्चों से एक पैसा भी नहीं लेते हैं। सब बाप का बच्चों के ही लिए है। बच्चों को यह कब भी ना सोचना है कि हमने बाबा को दिया या यज्ञ में हम इतना देते हैं। न ही तुम अपने ही लिए इकट्ठा करते हो। बाबा तो तुम्हारे धन की सिर्फ रक्षा करते हैं जो कि बच्चों के अगले जन्म में काम आ जावे। अब बाप समझाते हैं कि मैं सबको संदेश देने आया हूँ और जो भी धर्म स्थापन करने आता है वो संदेशवाहक नहीं है। अब बच्चे बाप को कहते हैं कि हमने अब बाप मिला है तो फिर बाप भी कहते हैं हमे तो 5000 साल के बाद बच्चे मिले हैं और हे बच्चों अब तुम मेरे हो और तुम ही जानते हो कि स्वर्ग का वर्सा बाप से ही मिलता है। बाकी वो तो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। अब बाप कहते हैं कि बच्चों मैं आया हूँ मामेकम् याद करो तो ही विकर्मों का बोझा हल्का होगा। अब बाप कहते हैं घर में रहते कमल फम समान पवित्र बनो तो तुम राजाई घराने में आय सकोगे। अब बाप समझाते हैं कि हे मेरे मीठे2 बच्चों अब हर घड़ी बुद्धि में ध्यान रखो कि मौत तो सामने ही खड़ा है। ऐसे ही करते2 अंत में कर्मातीत स्टेज तक पहुँचेंगे। नही तो बाप बता देते हैं कि जार2 रोना पड़ेगा। बाकी तो सब बच्चे अंधेरे में पड़े हुये हैं। मेरे मीठे2 बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए बाप रोज नई2 बातें बताते हैं कि कब तो बच्चों को कोई तीर घायल करेगा। बाबा बार2 कहते हैं कि याद का चार्ट रखो। मगर बच्चे समझते ही नहीं हैं। अब बच्चे जानते हैं कि बापदादा के द्वारा वर्सा मिलता है। बच्चे मौत सामने खड़ा है। इतना उॅचा बाप देखो कैसे तन में और कैसी दुनियॉ में आया है और फिर भी कितना देहीअभिमानी है। बच्चों (को) भी सिर्फ बापदादा को ही देखते हुये उॅचे ही बनते जाना है। ओम